

पोवारी बाल ई मासिक

झुंझुरका

ऑक्टोबर-नोव्हेंबर 2023

साल- ३रो , अंक २८ वो

पोवारी बाल बाचक चळवळ प्रस्तुत

संपादकीय.......

दोस्तहो रामराम.....

कसा सेव तुमी ? तुमला दिवारी की सुट्टी लगी रयेत. दिवारीकी तयारीबी तुमरी चालू रहे. दिवारीको सणच उत्साह बढावनेवालो, खुशी देनेवालो से. कपडालत्ता, नवी गाडी, वस्तू आदी खरेदी जोरसोरलक करेव जासे. गाव खेळामा मंडई, डंड्यार अना नाटकको माहोल देखनलाईकच रव्हसे. असो माहोलमा खुशीच खुशी जितंउतं चोवंसे.

घरमा सणको माहोलमा तुमी सबला मिलजुलके येव आनंद बाटनको काम करो. काहेका आनंद, खुशी बाटेलक अदिक बढंसे. शेजार बेठारमा लाडू चिवडा बाटो. संगमा झुंझुरका मासिकबी बाचो. या दिवारी "बाचन दिवारी" मुहून तुमी साजरी करो. अलग अलग किताबं बाचो. दिवारी अंक बाचो. अना तुमरो अनुभव आमरोसंगमा शेअर करो.

तुमला सबला झुंझुरका मासिक कनलक दिवारीकी लगीत लगीत शुभकामना!

- गुलाब रमेश बिसेन

संपादक - झुंझुरका पोवारी बाल ई मासिक

मो. नं. 9404235191

निर्मिती

महेंद्र रहांगडाले

गाय खेले दिवारीमा



बनं पूजासाती शेण, शुभ प्रतिक गोधन |

करंसेती दिवारी मा, संग गायको पूजन ||१||

जमा गायीइंको डेरा, होसे महातनी बेरा |

बिचोबिच आखर को, संग गोधन को ढेरा ||२||

फिरं गायकी बी मंग, पाच फेरा गायी संग |

नवी जनी गाय गोरा, खेलन को जमं रंग ||३||

लेकरूला सोवायके, गोधन मा खेलायके |

घरं सड़ा सरावन, होसे चऊक चांदन |

बनं शेण की डोकरी, सजं डयल आंगन ||५||

सील जातो देवघर, कांडी 'ना सपरीपर |

बनं चऊक पोवारी, गायखुरी लिखकर ||६||

दिवारी को दिवो जरं, वोनं गायखुरी परं |

संग पूजती डोकरी, सब पोवार को घरं ||७||

एक दिवो दिवारी को, जर जाये पोवारी को |

गाय खेले दिवारी मा, मान बड़े गोवारी को ||८||

श्री इंजि श्री गोवर्धन बिसेन, 'गोकुल'

नवो दिवस

भुलो वा काल की बात
नवो दिवस, नवी आस !
अज ला बनाओ खास
सत्कर्म की रखो प्यास !!

दिन आयेती ना जायेती
कभी दुःख ना कभी सुख !
दुष्कर्म को करो नास
खुशी की बढाओ भूख !!

गयी घडी नही आवनकी
दिवस सरेत, सरे साल !
समय को महत्व जान के
हर क्षण को करो ईस्तेमाल !!



संकट को करो सामना
मैदान मा रहो दट के !
रेती ला बाटो, तेल निकले
करो काम असो हट के !!

प्रेम जोडसे सबला साथ
सागर समान भरो मन !
दुनिया सारी मंगं आये
मन मा बसेत जन-जन !!

✍महेंद्र राहांगडाले

दिवारी की कामना



.*येन दिवारीला एक दिवो
भगवानजी को मंदिरमा
रोशन करनला दिवारी
जीनकी खूशी से अंधारोमा.

आयी बेरा हर्ष उल्हास की
भगवान एक मागनों से,
हशी खुशील कर दिवारी
ऐतरोच तोला सांगनों से.

गरिब को जीवनमा आता
अमिरी आनंद का पल दे,
धनवानला माणूसकी का
अन मन को मोठोपण दे.

सबको घर सुख समृद्धी
सेहत भरेव आरोग्य दे,
गरज पुरी होये ऐतरो
सबको घर धनधान्य दे.

एकदुसरोला काम आये
असो सबजनला मन दे,
कोणीला नोको दुःख दर्द भी
असो आवनेवालो सण दे.

येतरीच से मनसा मोरी
पुर्ण करो तुम्ही या से आस,
नोको करो आम्हला निराश
से पक्को असो मोला विश्वास

उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरित)

रामाटोला (अंजोरा) गोंदिया

नेंग दस्तूर खीर को

आयी होती मालवालं
संग संस्कृती धार की ।
बैनगंगा सहारालं
सजी खेती पोवार की ॥

आनसेती नौतरी मा
चरू दिवारीला घरं ।
खीर दुध चाऊर की
बनं टाकके साखरं ॥२॥

लक्ष्मी संगमा चवरी
मंग पूंजसे पोवार ।
खीर निवज चढाय
देसे देवला आहार ॥३॥

पयलोच दिवारीला
रीती रिवाज आंदी को ।
खीर टुराला चाटन
चम्मच चांदी को ॥४॥

नेंग दस्तूर खीर को
होसे तुरसी जवर ।
खासे खीर नवो जीव
नवा कपड़ा पेहर ॥५॥

दूर करे सब दोष
गर्भ मलीन आहार ।
करे पुष्ट लेकरूला
अन्न प्राशन संस्कार ॥६॥

इंजि. श्री गोवर्धन बिसेन

बतरा

पंख फुट्या
उडाय बतरा
आयी बारीस
भरी जतरा

लाकूड फाटा
हमेशा खतरा
कुटूर कुटूर
खाय बतरा

बिन पंखका
बड़ा चतरा
उधई, बत्तर
नाव केतरा

लग्या उड़ान
टलेब खतरा
पंख टुट्या
खतम बतरा



इजगूर भरं
पोटमा बतरा
जेतरा मायेत
पोटमा वोतरा

बल सिमनी
देख बतरा
भोवत्याल जम्या
गोवन सतरा

आयेत घरमा
भरे जतरा
सालमा एकघन
चोयेत बतरा

श्री गुलाब बिसेन, मु सीतेपार,
ता. तिरोडा

मायबोली को डंका बजन दे....

''

समाज हितलायी कार्य चलन दे ||

हिरदामा तोरो पोवारी खेलन दे ||१||



घरघर सबला पोवारी बोलन दे||

पोवारीला बढिया स्थान मिलन दे||२||

समाज को प्रती लगाव रव्हन दे ||

भाषाला उन्नती की सिढी चढन दे ||३||

उत्थान को मार्ग प्रस्थान करन दे ||

मायबोली को सही डंका बजन दे ||४||

साहित्य निर्मितीमा साज चढन दे ||

बोलीभाषा को गुणगान घडन दे || ५||

उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरित)

रामाटोला गोंदिया

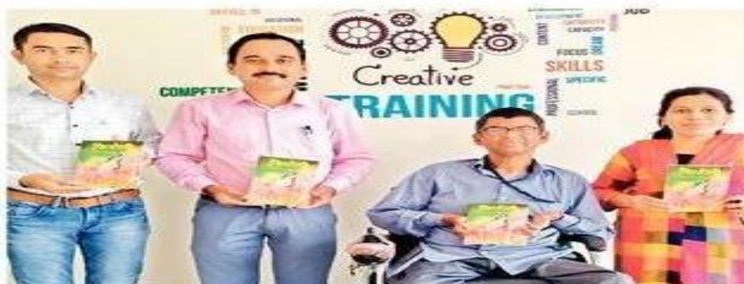
(श्रीक्षेत्र देहू पुणे)

फिफोली बालकविता संग्रह को प्रकाशन



संग्रह का किया विमोचन

■ बिरसीफाटा/तिरोड़ा (त.सं). तहसील के ग्राम सितेपार के लेखक गुलाब बिसेन की "फिपोली" इस प्रतिनिधिक पोवारी बाल कविता संग्रह का प्रकाशन आनंदवन में किया गया. मराठी व पोवारी के बाल साहित्यकार गुलाब बिसेन द्वारा संपादित पोवारी भाषा की "फिपोली" यह



बाल कविता संग्रह का प्रकाशन कवि रमेश बोपचे के हाथों आनंदवन में हुआ. कविता संग्रह में पोवारी भाषा के पंद्रह कवियों की चुनिंदा पैतालिस बालकविताओं का समावेश है. पोवारी बोली साहित्य का यह प्रथम बाल कविता संग्रह है. इस बालकविता संग्रह के संरक्षक ऋषि बिसेन संयुक्त आयुक्त आयकर विभाग, नागपुर है. इंजीनियर गोवर्धन बिसेन ने इस पुस्तक का प्रकाशन किया. इस अवसर पर कवि रमेश बोपचे, माया ठाकरे, महेंद्र रहांगडाले, गुलाब बिसेन आदि उपस्थित थे.

Gondia Edition
02-oct-2023 Page No. 3
epaper.enavabharat.com

प्रतिक्रिया

फिपोली मंजे जेला मराठीमा फुलपाखरू कसेती, वू जसो विविध रंगलक सुशोभित रवसे अना नहान टूरुपोटू इनला खूब साजरो लगसे तसोच फीपोली काव्यसंग्रह बालकविता को विविध रंगलक सुशोभित से. पंधरा साहित्यिक को पंचेचाळीस बालकविताको संग्रह मंजे फिपोली. पोवारीको बालसाहित्यिक चळवळमा येन काव्यसंग्रहका संपादक आदरणिय गुलाब बिसेन अग्रणी सेती. पोवारी बोलीको संवर्धन अना जतनको कार्य निरंतर जारी से अना बालसाहित्य को बिना वू पूरो नहीं होय सक. मुनच येव काव्यसंग्रह निरालो अना विशेष से. बालमनला भायेती, उनला कविता बाचता बाचता पोवारी बोलीकी गोळी लगे असा विषय येन काव्यसंग्रह की विशेषता आय. फिफोली को माध्यमलक सब साहित्यिकईन बालसाहित्यकी सप्तरंगी उधळण करीसेन. आमरो टुरूपोटुईनला पोवारीको रंगमा रंगनसाती येव काव्यसंग्रह उत्कृष्ठ से. उनको मनमा आपलो बोलीको प्रती प्रेम जगाये, पोवारी बोलनला प्रेरित करे याच अपेक्षा से.

फिफोली साती मेहनत लेनेवाला आदरणिय श्री.ऋषि भाऊ बिसेन, श्री .गुलाब भाऊ बिसेन, गोवर्धन भाऊ बिसेन अना समस्त साहित्यीकईको हार्दिक अभिनंदन आभार.

✍सौ छाया सुरेंद्र पारधी

माय सरस्वती

विद्‌या अना ज्ञान की देवी,
वीणावादिनी माय सरस्वती।
माय देय देजो असो वरदान,
मिल जाहे सबला उन्नति।।१।।

माय तोरो चरणकमल मा,
दिवस रात्रि करूसू वंदन।
विद्‌या अध्ययन करनवाला,
करसेती तोरो अभिनन्दन।।२।।

अज्ञानी को कारो इंधारो मा,
पेटाय देजो ज्ञान को दिया।
पढ़ लिखकन मोठा बनहेती,
सब गुड्डू छोटू रिया प्रिया।।३।।

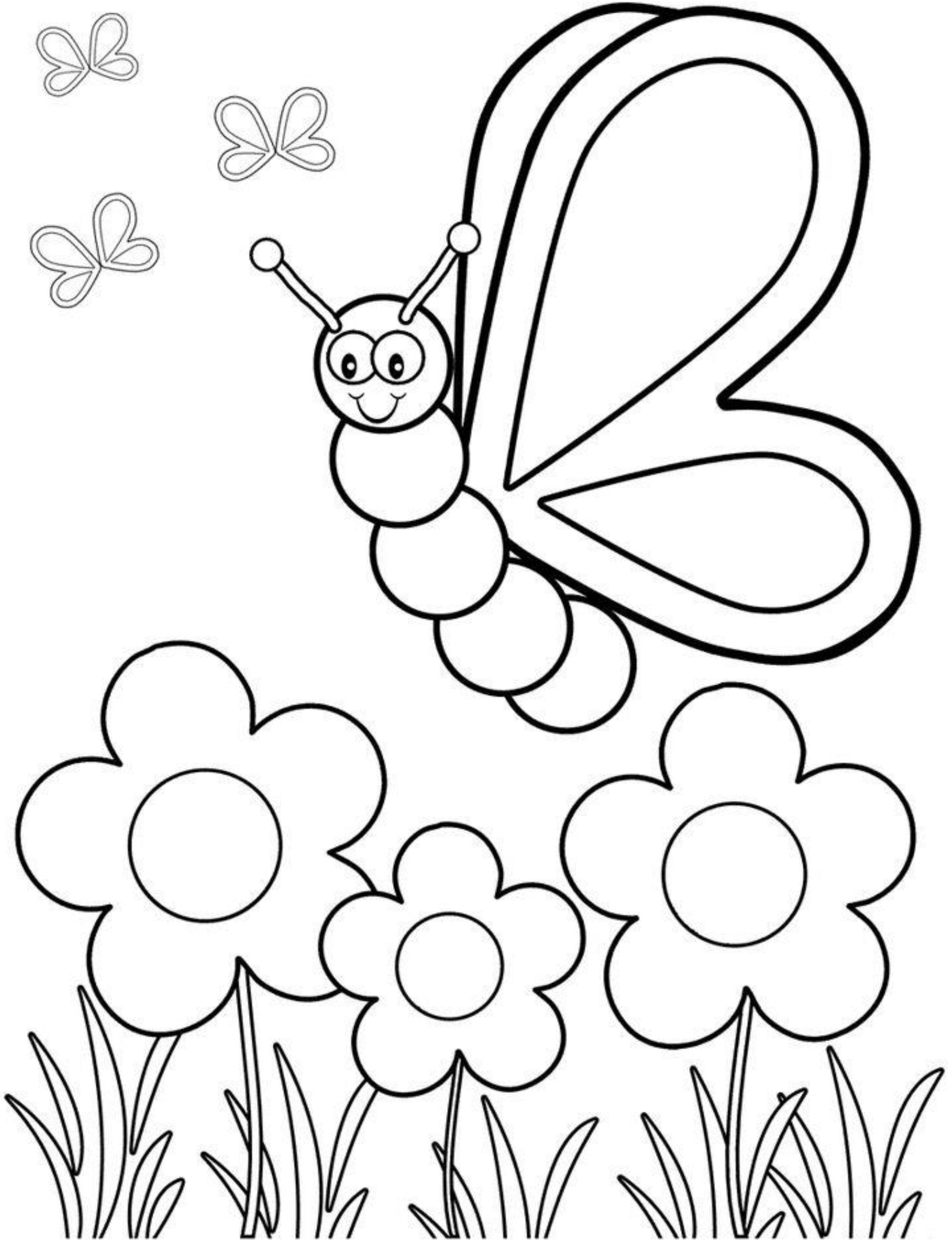


वीणा की तान को राग लक,
हिटसे ज्ञान विज्ञान को सुर।
किरपा करअ माय सरस्वती,
होय जाहे रोशन मोरो कुर।।४।।

मोरी माय हंसासिनी सरस्वती,
दे देजो हम सबला आशीर्वाद।
नहान मोठो सबकी से बिनती,
कर ले माय सबलक संवाद।।५।।

श्री ऋषी बिसेन, बालाघाट

रंग भरो



बोलो पोवारी



बाचो पोवारी



लिखो पोवारी

